नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
स्थापित २००५ ई.
7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक..... दिनांक : 14-10-2019

प्रकाशनार्थ

भारत और नेपाल सम्प्रभु राष्ट्र होने के साथ भू–सांस्कृतिक दृष्टि से एक ही राष्ट्र है। संस्कृति और परम्परा प्राचीन काल से भारत और नेपाल के बीच अत्यन्त घनिष्ठ रही है। नेपाल के सम्बन्ध में गोरखा शब्द की भावना गोरक्षपीठ एवं गुरु गोरखनाथ से संन्निकटता से जुड़ा है। नेपाल की स्थापना ही गुरु गोरखनाथ के आशीर्वाद से ही पृथ्वीनारायण शाह ने की थी। नेपाल के रग–रग में नाथपंथ है भारत और नेपाल का सम्बन्ध रोटी और बेटी के सम्बन्ध होने का अर्थ ही उसकी महत्ता स्वतः ही स्पष्ट कर देता है। भारत और नेपाल दो देश नही बल्कि एक कल्पित राष्ट्र और समुदाय है। गोरक्षपीठ और उसकी यशस्वी परम्परा ने इन्हीं मूल प्रस्थापनाओं के कारण ही भारत के लिए नेपाल के साथ अच्छे सम्बन्धों का न सिर्फ प्रयास किया बल्कि नेपाल के विभिन्न स्थानों पर नाथपंथ के पीठों की स्थापना कर अध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से एकाकार करने का पवित्र प्रयास भी किया। महन्त दिग्विजयनाथ महाराज की दृष्टि में भारत और नेपाल राजनीतिक रूप में भले ही दो राष्ट्र हो सकते है लेकिन दोनों की आत्म एक ही है। उक्त बातें महाराणा प्रताप पी. जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर में **युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 125वीं जयन्ती वर्ष एवं राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की शताब्दी जयन्ती वर्ष** के अन्तर्गत **"भारत –नेपाल सम्बन्ध एवं महन्त दिग्विजयनाथ"** विषय पर आयोजित संगोष्ठी के अवसर पर **मुख्य वक्ता बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय** के **प्रो. तेज प्रताप सिंह** ने कही।

प्रो. तेज प्रताप सिंह ने आगे कहा कि राष्ट्र राज्य की आवधारणा जो वेस्टफिलिया सन्धि से जुड़ा है उसकी पहचान सांस्कृतिक रूप से अखण्ड भारत जिसमें नेपाल भी सम्मलित है जुड़ा है। वर्तमान में भारत और नेपाल के जो सम्बन्ध है वह सुगौली सन्धि का क्षेत्रिय निर्धारण द्वारा स्थापित है। भारत ने समय–समय पर नेपाल में फैली राजनीतिक अस्थिरता को दुर करने का प्रयास किया है। यहॉ एक बात उल्लेखनीय है कि भारत और नेपाल के सम्बन्धों के बीच बराबरी का भाव भारत को रखना होगा। यद्यपि विगत छः–सात वर्ष पूर्व में भारतीय सरकार की अदूरदर्शितापूर्ण नीति ने नेपाल में चीन के हस्तक्षेप और भूमिका को बढ़ाने में मददकारी साबित हुई है। हाल ही में बुहान सम्मेलन में भारतीय राजनयन ने यह स्पष्ट कर दिया है कि चीन नेपाल में जो कुछ भी गतिविधि करेगा उसमें भारत की सहमति आवश्यक होगी। बिम्सटेक और बीबीआईएन जैसे क्षेत्रीय संगठनों ने सार्क के विकल्प के रूप में दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय, आर्थिक, सामरिक सहयोग को बढ़ाने पर बल दिया है जिसके कारण भारत नेपाल के बीच सम्बन्धों में प्रगारगढ़ता की नई शुरूआत की नई सम्भवना है। भारत–नेपाल सम्बन्ध में और व्यापक और घनिष्ठ बनाने की दृष्टि से यह आवश्यक है कि भारत की ओर से नेपाल के विकास के लिए जो घोषणाएं की जाय उसको उसी रूप में व्यवहारिकता के रूप में उतारा भी जाय। भारत–नेपाल सम्बन्ध में प्रगाढ़ता के लिए एक बात और ध्यान देने योग है कि नेपाल के राजशाही के प्रति भारत को अपने दृष्टिकोण बदलना होगा क्योकि नेपाल आम जन में

राजशाही के प्रति बेहद श्रद्धा रही है। इसीप्रकार भारत द्वारा नेपाल में होने वाले निवेश को भी नियोजित प्रकार से लागू करना होगा तभी भारत–नेपाल सम्बन्ध और दीर्घजीवी बन सकेगा साथ ही साथ भारत नेपाल के बीच व्यापार बेहद असंतुलित है उसे भी व्यवस्थित करने की महती आवश्यकता है। भारत के लिए नेपाल की महत्ता के इन तमाम कारणों से ही गोरक्षपीठ और उसके यशस्वी परम्परा ने महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने हमेशा नेपाल के साथ एकात्मभाव का न सिर्फ समर्थन किया वरन् पुरजोर ढंग से उसको प्रभावी बनाने के लिए कदम भी उठाये जो आज भी निरन्तर गतिमान है।

संगोष्ठी के **मुख्य अतिथि** दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं प्रतिष्ठित इतिहासविद् **प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी** ने कहा कि उत्तर भारत में हिन्दुत्व के प्रचार–प्रसार में महन्त दिग्विजयनाथ महाराज जी को योगदान अविस्मरणीय है। उन्होंने भारत की अन्तरात्मा, उसकी दृष्टि और उसकी आध्यात्म को सुरक्षित करने में विशेष योगदान किया है। इसी कड़ी ने भारत और नेपाल के बीच घनिष्ठता को महत्वपूर्ण मानते हुए अतुलनीय भूमिका का निर्वहन किया। बंकिमचन्द्र चटर्जी, स्वामी विवेकानन्द, वीर सावरकर और महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की दृष्टि अखण्ड भारत के निर्माण के लिए भारतीय संस्कृति का विस्तार हमेशा महत्वपूर्ण रहा है। इस दृष्टि से नेपाल में हिन्दूत्व की धारा का प्रवाह सहज ही देखा जा सकता है। नेपाल के सम्पूर्ण हिन्दूत्व के विस्तार के केन्द्र में महन्त दिग्विजयनाथ महाराज और गोरक्षपीठ का सीधा नियंत्रण सहज ही देखा जा सकता है। **नेपाल के जन–जन में गोरक्षपीठ के प्रति श्रद्धा का भाव आज भी वहॉ की समाज जीवन में परिलक्षित होता है।** महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने अपने सम्पूर्ण जीवन काल में जिस प्रकार से भारत नेपाल सम्बन्ध को जीवन्त किया वह आज भी गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर द्वारा निरंतर प्रवज्जलित है।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य **डॉ. प्रदीप कुमार राव** ने कहा कि भारत–नेपाल की आध्यात्मिक, राजनैतिक एवं भू–सांस्कृतिक सम्बन्ध को गोरक्षपीठ से अलग करके न कभी समझा जा सकता है और न ही प्रगाढ़ सम्बन्धों की कल्पना ही की जा सकती है। गुरू श्रीगोरक्षनाथ की तपोस्थली गोरखपुर आवश्य थी लेकिन उनकी कर्म भूमि वास्तव में नेपाल ही थी। गोरक्षपीठ का नेपाल के प्रति अनन्य लगाव स्पष्ट संदेश देता है कि भारत के लिए नेपाल प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक कितना महत्वपूर्ण है। 1920 से लेकर 1969 तक नेपाल के सम्बन्ध में शायद ही कोई ऐसा विषय या घटना रही हो जिसमें महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज का प्रत्यक्ष सरोकार न रहा हो। उन्होने नेपाल से सम्बन्धित हर मुद्दों का खुलकर समर्थन किया जो भारत–नेपाल सम्बन्ध की प्रगाढ़ता को बढ़ने वाला था और उन सभी मुद्दों का स्पष्ट विरोध किया जो भारत–नेपाल सम्बन्ध ने कटुता पैदा करने वाला था। नेपाल में गोरक्षपीठ की महत्ता का अनुमान इस बात से भी लगाया जा सकता है कि राजशाही समाप्त होने के बाद भी नेपाली मुद्रा पर गुरू श्रीगोरक्षनाथ से सम्बन्धित प्रतीक चिह्न आज भी अंकित है। **नेपाल में महायोगी गुरू श्रीगोरक्षनाथ और गोरक्षपीठ की भूमिका अमिट है प्रभावकारी है और प्रासंगिक भी है।** गुरू श्रीगोरखनाथ सम्पूर्ण नेपाल

के धर्मगुरू के रूप में श्रद्धा के साथ पूजित है और इसी कारण नेपाल के लोगों के लिए महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज सहित महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज तथा महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज हमेशा से पूज्य रहे है। नेपाल के लोग गोरक्षपीठ और भारत के प्रति सदा ही आशा भरी दृष्टि से देखते है क्योकि भारत के साथ से ही नेपाल का सर्वांगीण विकास उसकी अपनी पहचान और अस्मिता को बनाये रखने के साथ सम्भव है।

संगोष्ठी का शुभारम्भ महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के पावन चित्र पर पुष्पांजलि के साथ राष्ट्रगान, सरस्वती वन्दना, ईश वन्दना एवं बोधगीत के साथ प्रारम्भ होकर वन्देमातरम् के साथ सम्पन्न हुआ। **स्वागत भाषण** प्राचीन इतिहास विभाग के अध्यक्ष **सुबोध कुमार मिश्र** ने तथा **संचालन** राजनीतिशास्त्र के विभागाध्यक्ष **डॉ. अविनाश प्रताप सिंह** ने किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

(डॉ. राजेश शुक्ला)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी